RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 24 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 20 नवम्बर 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

रं संस्कृति के लिये संकल्प

बरेली में वार्षिक बैठक

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

बरेली। रं कल्याण संगठन की धूम इस बार बरेली में मची। रं संस्कृति के लिये संकल्प के साथ विभिन्न स्थानों से लोग यहाँ जुटे। बरेली के दोहना नामक स्थान पर मिनी (ए.जी.एम.) वार्षिक अधिवेशन 2023 का आयोजन इस बार था। इस अवसर पर व्यास, चौदस, दरमा घाटी की ओर से प्रतिनिधि उपस्थित थे। रं कल्याण संस्था द्वारा निर्धारित समयानुसार सुबह 10 बजे से सायं 6 बजे तक बैठक आहूत की। जिसमें केन्द्रीय पदाधिकारी के अलावा समस्त इकाई के पदाधिकारियों उपस्थित थे। बैठक मे वर्षभर में किये गये कार्य का व्यौरा प्रस्तुत किया गया। इकाइयों द्वारा किए गए कार्य पर भी चर्चा की गयी। साथ ही भविष्य की योजनाओं पर भी चर्चा करते हुए रणनीति बनाई गई। अपनी संस्कृति के लिये हर प्रकार से जुटने व जुड़ने का आह्वान व

शेष पृष्ठ 2 पर

आपदा की दृष्टि से सम्वेदनशील उत्तराखण्ड

डॉ. हरीश चन्द्र अंडोला

बस, ये बरसात बीत जाए तो चल जाएगा। आपदा की दृष्टि से सम्वेदनशील उत्तराखण्ड का परिदृश्य को कुछ ऐसा ही बयां कर रहा है। एक आपदा आने के बाद तंत्र दूरदृष्टि वाले सपने बुनता है और तमाम तरह के दावे किए जाते हैं, लेकिन इनकी कलई तब खुलती है जब दूसरी आपदा में तंत्र मूकदर्शक की भूमिका में ही दिखता है। इस बार के ही हालात देखें तो अतिवृष्टि से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। उस पर आपदा प्रबन्धन की स्थिति यह है कि सड़कों को खुलवाने में ही कई-कई दिन लग जा रहे हैं। ऐसा ही अन्य मामलों में भी है। इस सबको देखते हुए अब आपदा प्रबंधन को लेकर नए सिरे से सोच-विचार की जरूरत है। विषम भूगोल वाले उत्तराखण्ड का प्राकृतिक आपदाओं से चोली-दामन का साथ है। अतिवृष्टि, भूस्खलन, बादल ?टना, बाढ़, भूकम्प जैसी आपदाओं से राज्य निरंतर जूझ रहा है। ऐसे गाँवों की संख्या चार सौ का आंकड़ा पार कर चुकी है, जो आपदा के दृष्टिकोण से बेहद सम्वेदनशील हो गए हैं। यह सही है कि आपदा पर किसी का वश नहीं चलता, लेकिन बेहतर प्रबन्धन से इसके असर को न्यून किया जा सकता है। इसी दृष्टिकोण से सरकार ने अलग से आपदा प्रबंधन विभाग भी गठित किया है। यद्यपि, आपदा न्यूनीकरण के तहत विभाग समय-समय पर कदम उठाता आया है, लेकिन इनमें निरन्तरता, समन्वय, मॉनिटरिंग का अभाव अखरता है। यही कारण है कि आपदा आने पर वह गम्भीरता नहीं दिखती, जिसकी दरकार है। आपदा के समय ?ौरी तौर पर कुछ व्यवस्था अवश्य होती है, लेकिन कुछ दिन बाद मामला जस का तस हो जाता है। आपदा प्रबन्धन विभाग अभी तक पूरी तरह से सशक्त नहीं हो पाया है। उसके पास स्टाफ के साथ ही विशेषज्ञों का अभाव है। अधिकांश लोग उपनल अथवा संविदा पर कार्यरत हैं और इनकी संख्या भी बेहद कम है। ऐसे में जब काम करने वाले हाथ ही नहीं होंगे तो आपदा न्यूनीकरण, चेतावनी तंत्र, उपकरणों की देखभाल कैसे होगी, यह अपने आप में बड़ा विषय है। हालांकि प्रदेश के 5 जिलों में सामान्य से कम वर्षा भी दर्ज हुई। अवर्षण भी एक आपदा ही है। एक तरफ असामान्य बारिश और दूसरी तरफ भूस्खलन जैसी आपदायें सहोदर राज्य हिमाचल और उत्तराखण्ड के लिए बहुत गम्भीर खतरे के सबब बने हुये हैं। आपदाओं की बढ़ती आवृति को देखते हुए यह कहना असंगत न होगा कि अपनी मुसीबत के लिए इंसान स्वयं ही ज्यादा जिम्मेदार है। विकास के नाम पर प्रकृति के साथ बेतहासा छेड़छाड़ से भी आपदाएं बढ़ रही है।हिमाचल में हुए विनाश के पीछे चौड़ी सड़कों के लिए पहाड़ों को बेतहासा कटान माना जा रहा है। लेकिन ऑल वेदर रोड के नाम पर उत्तराखंड में जिस तरह पहाड़ों का कत्लेआम कर आपदाओं को दावत दी गयी उस पर मुख्यधारा का मीडिया भी पर्दा डालता रहा। सन् 2013 में केदारनाथ आपदा के बाद ?रवरी 2021 में हिमालय के अन्दर धौली गंगा की बाढ़ से हमने सबक नहीं सीखा है। धंसते हुए जोशीमठ की ओर हम 1975 से आँखें मूंदे हुए थे। यद्यपि, अब इसे लेकर उच्च स्तर पर मंथन शुरू हो गया है, इसके क्या नतीजे आते हैं, इस पर सभी की नजर है। ये बात अलग है कि निर्जन हो चुके गांवों में जिन व्यद्रियों की भूमि व भवन हैं, उन्हें इसके लिए राजी करना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं होगा। राज्य में अतिवृष्टि, भूस्खलन, नदियों की बाढ़, भूकम्प जैसी आपदाओं के कारण प्रभावित गाँवों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। पर्वतीय क्षेत्र में ऐसे गाँवों की संख्या सर्वाधिक है। इसे देखते हुए आपदा प्रभावित गाँवों के पुनर्वास के लिए वर्ष 2011 में पुनर्वास नीति आई, लेकिन शुरुआत में इसकी गति बेहद धीमी रही। केवल दो गांवों के 11 परिवार ही विस्थापित किए गए। इसके बाद इस मुहिम में तेजी आई और

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

केदारनाथ को लेकर

केदारनाथ धाम को लेकर जिस प्रकार की राजनीति शुरु हो चुकी है वह आस्थावानों के लिये चिन्ता का विषय है। साथ ही ऐसे पवित्र स्थलों को पिकनिक स्पॉट बनाना दुर्भाग्य ही होगा। राजनीति पार्टियों के बड़े नेताओं और चर्चित लोगों के आने पर पिछले कुछ समय से केदारनाथ लगातार चर्चा में है।

यह अच्छी बात है कि हमारे नेता और सरकारें इन शक्ति स्थलों को संरक्षण दें और संवारें लेकिन यहीं से अपना प्रचार करने की नीयत लेकर आने वाले किसी भी नेता को संभल जाना चाहिये। दरअसल हुआ यह है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केदारनाथ को संवारने के लिये संकल्प लिया और कार्य शुरु हो गया। संवारने का कार्य तो अपनी जगह है परन्तु मोदी जिस प्रकार बार-बार आकर यहाँ से सम्बोधन करते रहे और अपनी माया दिखाते रहे वह दुनियाभर के मीडिया में प्रचारित हुआ। इसके बाद फिल्मी हस्तियों का आगमन और उद्योगपतियों का आगमन भी सोशल मीडिया से लेकर अन्य मीडिया में छाया रहा। इस बीच कांग्रेस के शीर्ष नेता राहुल गांधी भी केदारनाथ प्रवास पर आ गये। उनके आते ही कुछों ने 'मोदी मोदी' नारे लगाये जबकि तीर्थ पुरोहितों ने काफी सम्मान किया। राहुल के आते ही यह घटना भी चारों ओर फैली है।

इन सारी बातों से सीधा सा समझ में आता है कि केदारनाथ सहित जितने भी शक्ति स्थल हैं उन्हें लेकर राजनीति करना उचित नहीं। इसके अलावा प्रचार पाने के बाद यहाँ पिकनिक की नीयत से आने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। कहने को तो आवागमन रोजगार के साधन बढ़ाते हैं लेकिन पवित्र स्थलों की मर्यादा बनाये रखना जरूरी है। यदि कोई साधना के भाव से इन स्थलों पर आता है तो वह हर प्रकार का आडम्बर छोड़कर आए। हमारे ऋषि मुनियों ने वर्षों साधना की और मन चाहा वरदान पाया, वह सब भीड़ का हिस्सा नहीं थे। उन्होंने कोई झण्डा नहीं लहराया बल्कि विश्व कल्याण के लिये अराधना की। उस परम्परा में आज भी संयासी रमे रहते हैं। ऐसे में जरूरी है कि हम सब मर्यादाओं का उल्लंघन न करें।

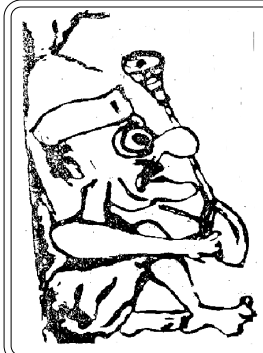

फसक

दाज्यू, जोरा-जोरी के लिये छात्र संघ ही ठैरा

चुनाव के धन्धे में कितनों का ही पलीता लग चुका है बल

दाज्यू, इस बार के छात्र संघ चुनाव में खूब फोड़ाफोड़ हुई। उत्तराखण्ड युवा राज्य ठैरा। जिधर-तिधर खोल दिये गये कालेजों में यही सब दिखाई दिया इस बार। कलजुग में युवा करें भी तो क्या? जोरा-जोरी के लिये छात्र संघ ही ठैरा। जीतने पर पार्टी वाले, धन्धे वाले मामू अपनापन दिखाते हैं। हमारा बालम भी इस बार जीत गया है। कह रहा है- 'लोक सभा चुनाव में गदर मचायेगा। जो हमसे टकरायेगा चूर-चूर हो जायेगा।' दाज्यू, बालम ने इतना ही सीखा है अभी तक। खूब नारे लगाता रहा। इसके बाबू रघु भी खुश हैं और कह रहे थे- 'चार साल की मेहनत सफल हो गई।'

हमारी कुछ समझ नहीं आ रहा है कि बालम और उसके बाबू रघु ने क्या सोच रखा है। हमें तो इतना ही पता है कि चुनावबाजी हर किसी के बस बात नहीं। चुनाव के धन्धे में कितनों का ही पलीता लग चुका है बल। पढ़ाई वाले दिनों में पता नहीं किस खपड्योव में लगे हुए हैं लौंडे-मौंडे।

चुनाव में खूब मरो-मारो मची और अन्त में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने 56 और एनएसयूआई ने 32 सीटों पर दबदबा बनाया। प्रदेश भर में पत्तरफाड़ों के लिये ये भी रंगत ठैरी। जिधर देखो न्यूज औ व्यूज। सोशल मीडिया भी तुरन्त कर्मकाण्ड कर देने वाला हुआ। देहरादून में चुट्टान मचा तो हल्द्वानी में लौड़योव हो गई। दे दनादन जिधर देखो लात-घूंसे। सीएम सैप के विधानसभा क्षेत्र में तो बच्चे खूंखार दिख रहे थे दाज्यू। खटीमा में घमाघम होते बची और एनएसयूआई जीत गई। बनबसा से लेकर चम्पावत तक कांग्रेस वाले गनमन करते रहे और एनएसयूआई आगे है। टनकपुर कालेज में तो गजब ही हो गया बल। अध्यक्ष पद के लिये दो का पर्चे निरस्त होने पर मचे हंगामे और कोर्ट में जाने के बाद किरकिरी हुई। राजकाज में यह होने ही वाला ठैरा। दीपावली के सीजन में प्रशासन और खाद्य सुरक्षा विभाग की टीमों ने छापेमारी कर मिठाई और दूध के नमूने जाँच के लिये भेजे। दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए कि नमूने.....क्या होगा इनका?

केदारनाथ को लेकर भी धुंआधार होने लगी है। कभी मोदी ज्यू का चर्चा होता है तो कभी दूसरों का। इस बार राहुल गांधी को लेकर चर्चा हुई। उनके चचेरे भाई वरुण गांधी के आने पर तो मीडिया ने और ही कर दी। दाज्यू, भाईयों का मिलन होने ही वाला ठैरा। अब इनके मिलन के मायने अपने-अपने तरीके से निकाले जा रहे रहे हैं। दाज्यू, पीड़ और क्वीड़ तो होती रहेगी। आपको दीपाववली की ढेर सारी शुभकामनाएं। ये जगमग जीवन को उजियारा करे।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

जोहार का मध्य.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

कौम से पहले जलथ में सिर्फ ल्वांल लोग ही निवास करते थे प्रभाव कम होने पर गाँव से पलायन करना पड़ा होगा, जिसका जिक्र कहीं नहीं है। ल्वाल पत्थर जो आस्था केन्द्र था दुम्मर स्थित की कहानी भी रोचक है।

सुनपति शौका का निवास पिलोखान धार, द्योथान स्थल, धार्मिक स्थल वर्तमान सुरिग गाँव के पास जलथ के पास ही है जलथ में केलै का उद्यान, बागिचा था। उसकी बेटी राजूली किरकुटी गार के पास नित्य स्नान करने गौरी नदी में जाती थी।

आज भी सुनपति के निवास स्थान पिलोखान से पश्चिम की ओर बुग्यालों के बीच शिलाखण्ड जो समाग्री का चट्टा (करबछ) बकरियां के शिलाखण्ड विछिन्न अवस्था में फैली है तथा स्त्री अंग वस्त्र (घाघरा) फैलाया अवतारी अहिल्या के शिलाखण्ड की याद ताजा करती है। जोहार में जगह-जगह शिलाखण्ड साफ नजर आती है।

पंनज्वारीयो का अवनति जोहार गढ़वाल बधाण के रावत जो धामू रावत गढ़वाल के राजा के दरवार में सेवा देने के पश्चात तिब्बत के सूर्यवंशी राजा के वहाँ सेवा देने कार्य भी किया था। कई पीढ़ी के तिब्बत में रहने के उपरान्त उनके बशंज अपनी यायावरी प्रवृत्ति के कारण शिकार करते मी- ढुंग (मिलम) तक पहुँच गया था यही पर लुप्त शिकार हो जाने के का, शुभ संकेत मानते यही बसने का इरादा बना लिया।

रावतों के आगमन से पहले जीवर (जोहार) क्षेत्र में ल्वांल, रहलम्वाल के प्रभुत्व के बाद आधुनिक जोहारियों के आगमन के समय में बुर्फालों का प्रभाव जोहार घाटी में था। जन-धन बल में भी शक्तिशाली थे। धामू रावत के वंशजों की महत्वकांक्षा वर्चस्व की लड़ाई में बुरुाल लोगों भारी पड़ते नजर आ रहे थे। रावत कौम के लोगों को बोरे (थैला) में डालकर गोरी नदी में बहाना बरफालो के लिए आम बात हो गई थी। रावतों ने गढ़वाल से अपनी संख्या बल बढ़ाने हेतु अन्य जातियों के लोगों को भी जोहार में बसाना शुरू कर दिया बिज्वाल, टोलिया, मर्तोलिया, लस्पाल, धपवाल, सुमत्याल, खिनच्यांल, क्वीरीयाल, मपवाल, रिलकोटिया गनघरिया ये सभी मिरम्वालो के सहयोगी बनकर आये होंगे जिसका जोहार के इतिहास में कहीं पर अधिक उल्लेख नही किया गया है अवश्य उन्हें मिरम्वालो ने जोहार में बसने के लिए प्रेरित किया होगा, शासक वर्ग के इतिहास के अपेक्षा अन्य उपजातियों के इतिहास का उल्लेख कम होना स्वाभाविक ही है अवश्य कमी रोचक इतिहासक घटनाओं का उल्लेख न हुआ हो, जो स्वत: लुप्त, समाप्त हो गया होगा।

बुर्फालों के प्रभाव को समाप्त करने के लिए मिरम्वालो ने कूटनीति का सहारा लिया। प्रतिद्वंदी को कमजोर कर लड़ाई जीत लिया, समगो कांड में सारे बर्फाल पुरूष मारे गये। केवल एक असडीवा बचा था जिसे मिरम्वाल अपने साथ गढ़वाल ले गए आज भी उनके वंशज वहाँ निवास करते हैं समजाँ व्यक्ति गढ़वाल से आकर बर्फाल कौम के साथ भाई के रूप में सम्मिलित हो गया था।

जोहार में अब भी धामू रावतों के वंशजों में आंशिक हिंदुवी संस्कार होने के कारण सामाजिक परिवर्तन होता गया। पंज्वारीयों का धार्मिक उन्मुलन होता रहा। बौद्ध व बौना धर्म के अनुष्ठानिक कार्य समाप्ति करते गये। बाह्मणीकरण संस्कारो को आगे बढ़ाया गया तथा कुछ जनजातीय संस्कृति भी साथ-साथ चलती रही, जिसकी विशिष्टता से ही जोहारियों की पहचान आज तक बनी है। आज कुछ पंज्वारीयों की संख्या नाम मात्र के रह गये है, जैसे- ल्वांल, रहलम्वाल लोग हैं।

बरफालो के महिलाओं ने चंद दरबार में अपनी गुहार लगाई। जोहार में सीरा के नेपाल नरेश के परास्त हो जाने के पश्चात जोहार चंदशासन रूद्र चंद के अधिकार क्षेत्र में आ गया। समगों काण्ड का विषय रुद्रचंद तक पहुँचा। मदकोट में रुद्र चंद राजा का न्याय दरबार लगा बरफालो को अपने पक्ष में न्याय की उम्मीदें थी किंतु मिरम्वाल भी हंगामे के साथ पहुँचे। तब दोनों पक्ष की बात सुनने पर बराबर दोषी घोषित किया गया। पहले पंज्वारीयों वह आधुनिकण जोहारियों के बीच विवाह सम्बन्ध स्थापित न था, रूद्रचंद द्वारा विवाह सम्बन्ध जोड़ने की पहल की गई व विवाद समाप्त होता गया। यहीं से दोनों जोहारियों के सम्मिश्रण से रक्त सम्बन्ध भी स्थापित हो गया। तीनों कालों के जोहारियो का सम्मिश्रण से ही आधुनिक जोहारियों का नया युग, संस्कृतिकरण से आधुनिक जोहारी शौका कहलाये जाने लगे है।

आपदा की दृष्टि.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

2016 से अब तक 86 गाँवों के 1485 परिवारों को विस्थापित किया गया। अभी भी शासन स्तर पर 10 गाँवों के 78 और जिला स्तर पर 22 गाँवों के 148 परिवारों के पुनर्वास से सम्बन्धित प्रस्ताव लम्बित पड़े हैं। यद्यपि, शासन का कहना है कि इन प्रस्तावों पर जल्द निर्णय लेने के साथ ही पुनर्वास की गति को अब तेज किया जाएगा। जानकारों के अनुसार यह चुनौती ऐसी नहीं, जिससे पार न पाया जा सके। आपसी सहमति और सम्बन्धित परिवारों को समुचित मुआवजा या फिर भूमि अधिग्रहण के विकल्पों के आधार पर इस दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

रं संस्कृति के लिये.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

संकल्प इस आयोजन में था।

रात्रि कालीन सत्र मंचीन प्रस्तुतियों का रहा। इसमें साँस्कृतिक कार्यक्रम अपने रं बोली और रंगा, चुग बाला द्वारा बरेली इकाई, हल्द्वानी इकाई द्वारा सुन्दर गीत और नृत्य तथा नन्हे बालक-बालिकाओं द्वार सुन्दर नृत्य रं भाषा मे पेश किया गया। इसी क्रम मे श्रीमती पुष्पा दुग्ताल द्वारा स्वर्गीय जसुली अम्मा पर स्वयं द्वारा रचित गीत की भी सुन्दर प्रस्तुति की। इस बैठक मे नृप सिंह नपलच्याल, मुख्य संरक्षक, बिशन सिंह इवदंस संरक्षक, अध्यक्ष करन सिंह बोनाल, महासचिव धीरेन्द्र दताल, फली सिंह दताल, महिमन सिंह ह्यांकी तथा समस्त इकाइयों के पदाधिकारी उपस्थित थे।

इस भव्य आयोजन से आयोजन स्थल पर सभी अर्चभित रहे। अब चौंदास में होने वाले अगले एजीएम के लिये भारी उत्साह लोगों में अभी से दिखाई दे रहा है। महिमन सिंह कहते हैं कि वहाँ वृहद स्तर पर फिर से जुटेंगे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इतिहास

जोहार के पंज्वारीयों का अभ्युदय व अवनति

जोहार का मध्यकाल : पंज्वारीयों का वर्णन

जगदीश सिंह वृजवाल

जोहार के विषय में इतिहासकारों का शोध, प्रचलित किंवदंतियां, जनश्रुति, मत-मतांतर को आधार मानते हैं तो जोहार के इतिहास के कालों का वर्गीकरण करना आसान हो जाता है। तब हम प्रथम, द्वितीय, तृतीय काल का निर्धारण करते हैं- 1-हल्दुवा-पिंलुवा काल
2-पंज्वारी काल
3- आधुनिक जोहारी काल

जिन्होंने भी अपना-अपना प्रभुत्व जोहार में स्थापित किया है

जोहार के इतिहास जानने के लिए प्रथम, द्वितीय शताब्दी तक के इतिहास को खंगालने की आवश्यकता भी पड़ती है।

मध्य एशिया के यायावरी अश्वारोही पशुचारक, आयुधजीवी, शक जाती के धुमन्तु चारागाह के ढूंढखोज में दक्षिण की ओर बढ़ते मध्य हिमालय को पार कर भारत भूमि में उत्तर की ओर से प्रवेश करने लगे थे, कमजोर शुंग वंश को परास्त करने के बाद शक वंश का विस्तार भारत के अच्छे खासे क्षेत्र में अधिपत्य स्थापित कर लिया था। जिसने लगभग 200 बर्षो तक भारत में पहली शताब्दी के बाद शासन किया। इनका सबसे प्रतापी राजा रुद्रदामन था। तीसरा -चौथी शताब्दी में गुप्त शासकों द्वारा पुनः उत्तर की ओर खदेड़ दिया गया था।

आज के कुछ एक इतिहासकारों का मानना है इन्हीं शकों के वंशज महान हिमालय के तलहटी में अपने को सुरक्षित समझते निवास करने लगे। जिन्हें कुशाणों के आक्रमणों से भी बचना था। जो मुंगोल मुख मुद्रा तिब्बती बमह्न भाषा से सम्बध भी रखते थे।

जोहार (जीवर) जहाँ छठी, सातवीं शताब्दी में हलदुवा-पिंगलुवा के शासन होने का आशंका हैं जिसे इतिहास कार शकों के वंशज ही मानते हैं, जोहार में स्थानीय निवास करते लगे। शक, हिन्दू, बौद्ध, पारसी धर्म के अनुयाई थे।

जोहार के हरिद्रक, कुद्र, बनिता जिनकी कहानी नाग वंश से सम्बन्धित होने का बोध कराता है। हल्दुवा-पिंलुवा के लोग भी हुणदेश से व्यापार करते थे। पुरू नरभक्षी पक्षी द्वारा संहार से अवसान हो गये थे जो कुछ अवशेष रहे, उन लोगों ने 'साकिया लामा' के शिष्य के साथ नया जोहार पंनज्वारीयों का बसाकर नये युग की शुरुआत की।

15 शताब्दी के उत्तरार्ध 16 वी शताब्दी के पश्चात 1670 में चंद शासक बाजबहादुर चंद के मानसरोवर यात्रा तथा लौरू बिल्जवाल तथा मंछू रावत के अगुवाई करने के बाद ही जोहार का क्रमिक इतिहास लिखा जाना प्रारम्भ हुआ है।

ई0टी0एटकिंसन ने सर्वप्रथम हिमालय गजेटियर में शाक्य लामा (शाक्य मुनि) के शिष्य द्वारा पंनज्वारीयों को बसाने का उल्लेख से सम्बन्धित जानकारी लिपिबद्ध किया गया है तत्पश्चात ही अन्य इतिहासकारों के शोधकार्य से भी जोहार के विषय में अधिक जानकारियां जानने का अवसर जोहारियों को प्राप्त हुआ है।

महान हिमालय क्षेत्र के तिब्बत मार्ग स्थिति लपथल नामक स्थान में एक गुफा में 'शाक्य लामा' ध्यानास्थापित करता था। जिसके साथ सदैव एक शिष्य भी रहता था शाक्य लामा बौना तांत्रिक जिसे आकाश में उड़ने की विद्या का ज्ञान था। वह शाम के वक्त गुफा से उड़कर लपथल में आ जाता था।

शाक्य लामा को एक बार अपने दिव्य दृष्टि से ज्ञात किया गया की जीवर(जोहार)क्षेत्र में गोरी नदी ग्लेशियर के पास पुरू नरभक्षी विशाल पक्षी द्वारा हल्दुवा-पिंलुवा के लोगों का सहारं करते नजर आ रहा था, जिस घटना को शिष्य को अवगत कराकर उसे मार गिराने को कहां गया (दिव्य-अस्त्र-शस्त्र तीर-धनुष के साथ मार्गदर्शक को दिया गया किन्तु शिष्य ने मार्ग अनभिज्ञता की बात कही। शाक्य लामा द्वारा मार्गदर्शक दिया तथा भयभीत न होने की बात उससे कही गई।

शाक्य लामा का शिष्य ने अपने मार्गदर्शक के साथ जब जीवर की ओर प्रस्थान किया तो मार्गदर्शक ने थोड़ी चलकर अपना भेष बदलना शुरू किया, गुरू द्वारा किसी प्रकार भयभीत न होने के विषय में पहले बता दिया गया था. जिस कारण बिना विचलित हुए आगे बढ़ता रहा, मार्ग दर्शक ने भेष बदलना शुरू कर दिया कुत्ता - किगडी -बिगडी, हिरण- डोलडुंगा, भालू - टोपी ढुंगा, ऊंट-ऊंटाधूरा, बाघ-डुंग उडियार अन्त में पिंगलुवा राज्य समगो क्षेत्र में खरगोश खो गया। कुत्ता, हिरण ऊंट, भालू, बाघ, खरगोश, पुशओं ने मार्गदर्शन कराकर आज भी उन स्थानों का नाम उन्ही के नाम से जाना जाता है। जीवर क्षेत्र समगों में प्रवेश तथा उस स्थान पर मानव कंकाल विछिन्न अवस्था में बिखरे पड़े थे। तब उसे दुर छोटा-सा मकान नुमा घर में बृद्धा की आवाज सुनाई पड़ी। वह उसके पास जाकर यहाँ की स्थिति की जानकारी चाहता था, बृद्धा ने नरभक्षी पक्षी द्वारा किए कुकृत्यों का उल्लेख किया। तथा यहाँ आने का प्रयोजन के साथ सावधानी बरतने कि बात भी कही। साथ नरभक्षी की चर्चा दोनो ओर से की जा रही थी, बृद्धा के पूरे शरीर बालों से ढ़का हुआ था। वह बहुत मकान होने की बात कह रही थी. बस नमक न होने के विषय में बताती रही, अचानक भयानक आवाज के साथ पुरू पक्षी आकर वृद्धा के उपर झपटकर उसे खा गया, सचेत लामा के शिष्य द्वारा नरभक्षी पुरू को बाणों की बौछार से ढेर कर दिया गया। तथा जोहार भूमि के प्रति मन में आकर्षक बढ़ने से अग्नि प्रज्वलित कर शपथ लेते की मैं वापस आऊँगा, मेरे आने तक अग्नि प्रज्वलित रहेगा तो अवश्य इस क्षेत्र को आबाद कर क्षेत्र में लोगों के बसासत को बढ़ाने का कार्य करूंगा और लपथल अपने गुरु शाक्य लामा से मिलने वापस चला गया। शाक्य लामा को जीवर की सारी जानकारी दी गई। तथा नमक न होने की बात भी की लामा द्वारा जोहार में नमक छिड़क दिया तभी से जोहार में आज भी सभी उपजाऊ चीजें लवणयुक्त होती है। शाक्य लामा ने उन्हें जोहार (जीवर) को पुनः बसाने को कहा, लामा का शिष्य ने पुनः वापस जीवर भूमि पर कदम रखकर उसने प्रज्वलित अग्नि को जलते ही देखा, तब अवशेष बचे लोगों के साथ पंनज्वारीयों को जोहार में बसाने का कार्य किया गया।

जोहार में पाँच उपजाति के लोग रहते थे इतिहासकार सात जाति की बात भी करते है। हेलम्बा धनोरबा, तितरबा, ल्वांल ल्वां, बुर्फाल बुर्फु , रहलम्वाल रालम, निखुर्पा- मिलम कौम अस्तित्व में आया जिसमें हेलम्बा के विषय में कहा जाता है कि हेलम्बा जेष्ठ कौम था उन्हीं का प्रभुत्व शासन सर्वप्रथम रहा है।

7 वीं 8 वीं शताब्दी में तिब्बत में बौद्ध धर्म शाक्या पंत की स्थापना हो गई व शाक्य लामा बौन तांत्रिक था।

पंनज्वारीयो में बौनधर्म व बौ)द्धधर्म का प्रभाव था इनके अनेक अवशेष सों - बलि घड़ी के हुई के बिपरित बकरे को घुमाकर बलि देना, बौन धर्म अनुष्ठानिक कार्य, तथा मतकोट के पास बौना गाँव का सम्बन्ध बौन धर्म से रहा होगा। बौ का उच्चारण पु, प जो पंनज्वारी कहलाये थे विलुप्त शौकीया खुन, रकंश शौकीया बोली, बौद्ध खस जाती के सम्पर्क में आने से मूल शब्द समाप्त हो गये अब बोली जाने वाली बोली सभी तिब्बती, कुमाऊं, पुरानी जोहारी शब्दों का मिश्रण जिसमें खस जाति संपर्क से कुमाऊनी बोली के शब्द अधिक हैं।

पंज्वारीयो का धार्मिक मान्यताएं सम्बन्धित अनुष्ठान, जगह-जगह तिब्बती भाषा में उत्कीर्ण प्रस्तर खण्ड का होना, पंनज्वारी बौद्ध संस्कृति व बौन अनुष्ठान के प्रभाव में भी थे। उस काल में के जोहारीयों तथा दारमा, चौदास संस्कृति संस्कारो में एकरूपता दिखता है।

बुरफाल- बारफाग 'बारफाग' आकाश से अवतरित तिब्बती भाषायी शब्द, जगंपागी-ज्यांग, ज्यांगथांग निवासी, शाक्य लामा के शिष्य थे। चरखमिया जगंपागी नागवंशी शक जाती से सम्बन्ध रखते थे। निखुर्पा- 'तीर्थ की परिक्रमा करने वाले' लामा पुरोहित आज भी इनके लामा घर स्थिति मिलम में है। धनोरबा, तितोरबा के कहने में सभी असमर्थ हैं।

पंनज्वारीया तिब्बत से नमक, ऊन, थोकजुलंग क्षेत्र से सोना लाकर भारत पहुँचाते थे सुनपति सौकार अन्य जातियों से अधिक व्यापार करने तथा धनाढ्य होने के कारण पत्नी गांगुली, रूपवती पुत्री राजुली अधिक जाने लगी।

सुनपति पंनज्वारीयो में ल्वांल जाति से सम्बध रखते थे। जिनके विषय में किंवदंती, जनश्रुति, लोकगाथा, गीत, जागर आज भी प्रचलित है सुनपति शौका का काल 12वीं 13 वीं शताब्दी को मानते है राजुली की माँ चंद राजधराना चम्पावत से सम्बन्ध रखती थी गुना पाल जिससे राजुली की सगाई हुई इसी शताब्दी की बात है। कत्यूरी राजकुमार मालुशाही-राजुली का प्रेम प्रसंग गाथा इतिहास के पन्नों में कौतूहल का विषय बन चुका है सुनपति शौका के विषय में कई विकृत कहानियाँ है पर मूल राजूली शौक्याणी, सौकार भोटान्तिक क्षेत्र से सम्बन्ध बताता है।

सुनपति शौका जोहार में ल्वां गाँव व मुनस्यारी क्षेत्र में जलथ गाँव के रहने वाले थे आज भी ल्वांल न होने पर भी ल्वांल धारा यह प्रमाणित करता है रावत

शेष पृष्ठ 2 पर

ज्योतिष की बातें - 153

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है। चन्द्रमा क्रमशः कुम्भ, मीन, मेष व वृषभ राशियों में इस सप्ताह गोचर करेगा। इस सप्ताह में चार विशेष पर्व मनाए जाएंगे।

हरिबोधनी एकादशी- कार्तिक शुक्ल एकादशी उदयव्यापिनी तिथि तदनुसार गुरुवार 23 नवम्बर 2023 को उल्लास पूर्वक देवउठनी अर्थात् हरीबोधनी एकादशी का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन भगवान विष्णु चार महीने की निद्रा के बाद जागरण करते हैं।

तुलसी विवाह- देव उठनी एकादशी की पारणा के दिन तुलसी विवाह मनाया जाता है। तदनुसार शुक्रवार 24 नवम्बर 2023 को हिन्दू समाज तुलसी विवाह का उत्सव सम्पन्न करेगा ।

बैकुण्ठ चतुर्दशी- नरक चतुर्दशी के पन्द्रह दिन बाद कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी अर्धरात्रि व्यापिनी तिथि में बैकुण्ठ चतुर्दशी का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार 25 नवम्बर 2023 को भगवान शंकर की पूजा करने के बाद भगवान विष्णु का पूजन किया जाएगा।

देव दीपावली- कार्तिक पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी तिथि तदनुसार रविवार 26 नवम्बर 2023 को (विशेष रूप से वाराणसी में) देव दीपावली का पर्व मनाया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक् विचार- 44

ज्योतिष में भी भय का व्यापार

1. कालसर्प दोष- पहले केतु से राहु के मध्य सभी ग्रह आ जाने के कारण कालसर्प दोष कहा जाता था। फिर राहु से केतु के मध्य भी सभी ग्रहों के आ जाने को भी कालसर्प दोष कहा जाने लगा। इसके बाद यदि चन्द्रमा अथवा सूर्य में से कोई एक राहु-केतु से बाहर निकल जाता है तो उसको भी कालसर्प दोष कहा जाने लगा और अब तो सूर्य, चन्द्र दोनों के राहु-केतु से बाहर निकल जाने को कालसर्प दोष कहने लगे हैं। कुछ ज्योतिषी तो पंचतारा ग्रहों में से भी किसी एक के और बाहर निकल जाने को भी कालसर्प दोष अब कहने लगे हैं। इस प्रकार कालसर्प दोष आधुनिक ज्योतिषियों के मध्य इतना अधिक व्यापक हो गया है कि प्रायः सभी जन्मकुण्डलियों में कालसर्प दोष दिखाई पड़ने लगा है। वैसे यह कालसर्प दोष ज्योतिष की मुख्यधारा के प्राचीन ग्रन्थों बृहज्जातक, पाराशरी, सरावली जातकपरिजात आदि ग्रन्थों में नहीं पाया जाता है।

2. पितृदोष- पहले ग्रहण योग अर्थात् सूर्य के राहु केतु से ग्रसित होने पर लोग पितृदोष कह दिया करते थे। फिर सूर्य को शनि से भी पीड़ित होने पर पितृदोष कहा जाने लगा। अब गुरु के भी राहु, केतु अथवा शनि से पीड़ित होने पर पितृदोष बताया जाने लगा है। पहले तो पाँचवें भाव में ही पितृदोष बनता था। अब तो लग्न भाव, द्वितीय भाव, सप्तम भाव, नवम भाव, एकादश भाव में भी सूर्य, चन्द्र अथवा गुरु यदि शनि, राहु, केतु की ख्रष्टि अथवा युति से प्रभावित हों तो पितृदोष कहा जाने लगा है। ऐसी स्थिति में 100 प्रतिशत जन्म कुण्डलियों में पितृदोष दिखाई पड़ता है। अर्थात् बिना जन्मकुण्डली देखे ही आजकल के ज्योतिषी कह देते हैं कि इस कुण्डली में पितृदोष है, शान्ति करानी पड़ेगी। आधुनिक ज्योतिषी वास्तव में धार्मिक ग्रन्थो में वर्णित पितृऋण को ही ज्योतिष से जोड़कर पितृदोष कहने लगे हैं। पितृदोष का भी प्राचीन ज्योतिषीय ग्रन्थों में वर्णन नहीं पाया जाता है।

3. मांगलिक दोष- पहले लग्नकुण्डली में पहले, चौथे सातवें, आठवें और बारहवें भाव में मंगल होने पर मांगलिक दोष कहा जाता था। फिर चन्द्र कुण्डली में भी उक्त स्थानों पर मंगल होने को मांगलिक दोष कहा जाने लगा। अब तो कुछ ज्योतिषियों के विचार से शुक्र से भी यदि उक्त स्थानों पर मंगल है तो मंगलदोष होता है। इस प्रकार यदि लग्न कुण्डली, चन्द्र कुण्डली और शुक्र कुण्डली तीनों के आधार पर मंगल का विचार करेंगे तो लगभग 90 प्रतिशत कुण्डलियों में मांगलिक दोष दिखाई पड़ेगा। वैसे मंगलदोष के विभिन्न परिहार भी ग्रन्थों में पाए जाते हैं। व्यापक हो चुके इस मांगलिक दोष के कारण लड़के लड़कियों के विवाह होने में भी अब दिक्कतें आ रही हैं।

उपरोक्त तीनों दोषों का आजकल ज्योतिष क्षेत्र में बोलवाला है। कोई भी ज्योतिषी बिना कुण्डली देखे आँख मूंदकर कह सकता है कि इस कुण्डली में फलां दोष है, इसकी शान्ति करवानी पड़ेगी। इन तीनों दोषों से जातक को भ्रमित और भयभीत करने वाले ज्योतिषियों को दूर से ही नमस्कार कर देना चाहिए ।

-सरल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

श्रद्धांजलि
उत्तम सिंह जंगपांगी

हल्द्वानी। अग्रणीय समाजसेवी, मृदुभाषी उत्तम सिंह जंगपांगी का 11 नवम्बर 23 को प्रातः 4.30 बजे निधन हो गया। हमेशा से हिमालय सा विराट व्यक्तित्व लिये उत्तम सिंह भारतीय स्टेट बैंक के मुख्य प्रबन्धक रहे चुके थे। अपनी बैंकिंग सेवा के दौरान भी वह सामाज हित में अत्यधिक सक्रिय रहे। मल्ला दुम्मर में होने वाली हरि प्रदर्शनी के लिये वह हर-हमेशा तैयार रहते और इसे सफल बनाने के लिये लोगों को जोड़ते थे। इसी प्रकार जोहार सहयोग निधि की स्थापना से लेकर वर्तमान में अस्वथ्य होने तक भी वह सेवा देते रहे।

सैनिक कालोनी, हल्द्वानी में निवास करने वाले उत्तम सिंह जी को पक्षाघात हो गया था लेनिक उनकी जीवटता ही थी कि वह काफी ठीक हो चुके थे और समाज हित के कार्यों में जुड़े रहे। उनकी ईमानदारी और व्यवहार को देखते हुए शहर से लेकर गाँव तक हर गतिविधियों में उन्हें जिम्मेदारी सौंपी जाती थी। पिघलता हिमालय के वरिष्ठ सदस्य के रूप में जंगपांगी जी ने हमेशा बढ़चढ़ कर सहयोग किया और इस बात को जन-जन तक पहुँचाया कि यह केवल पत्र मात्र न होकर एक परम्परा और अभियान है जो सुदूर सीमान्त तक आत्मा के साथ घुला है।

वह दौर जब उत्तम सिंह जी अल्मोड़ा में बैंक सेवा में थे लगातार गतिविधियां होती रहीं और कई लोगों का साथ मिला। उन्हें अपनी संस्कृति से जितना लाड़ था उतना ही साहस व्यवहारिक रूप से कार्य करने में था। इनका पूरा परिवार जन सरोकारों से जुड़ा है। पिघलता हिमालय अपने वरिष्ठ साथी स्व. उत्तम सिंह जंगपांगी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

राष्ट्रीय खेलों के लिये देवभूमि में होगी खेल भूमि की स्थापना

देहरादून। राष्ट्रीय खेलों के लिये देवभूमि उत्तराखण्ड में खेल भूमि की स्थापना होगी। खेल एवं युवा कलयाण मंत्री रेखा आर्य ने बताया है कि 38वें राष्ट्रीय खेलों के लिए युद्धस्तर पर तैयारी की जा रही है। किसी भी खिलाड़ी को कोई कमी नहीं होने दी जायेगी।

गोवा में हुए राष्ट्रीय खेलों के समापन पर आगामी खेलों का ध्वज लेने के लिये पहुँची मंत्री ने मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत से भेंट कर उन्हें 37वें राष्ट्रीय खेलों के सफल आयोजन के लिये बधाई दी। आगामी खेलों के लिये ध्वज ग्रहण किया। उन्होंने गोवा के खेल व युवा कल्याण मंत्री गोविन्द गौड़े से भेंट कर राष्ट्रीय खेलों को कुशलतापूर्वक सम्पन्न कराने पर बधाई दी। खेल मंत्री रेखा आर्य ने जीटीसी के चैयरमैन अमिताभ शर्मा से भी भेंट की।

उल्लेखनीय है कि उत्तराखण्ड में होने वाले 38वें राष्ट्रीय खेलों को लेकर सरकार द्वारा पहले से ही खिलाड़ियों को बेहतरीन प्रदर्शन के लिये कहा है। उन्हें प्रोत्साहित करने के लिये नौकरी लाभ तक के लिये कहा है।

राष्ट्रपति का उत्तराखण्ड दौरा

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने बार उत्तराखण्ड का व्यस्त दौरा किया। बदरीनाथ के दर्शन के अलावा राष्ट्रपति ने पन्तनगर विश्वविद्यालय व हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में बतौर अतिथि भागीदारी की। राज्य स्थापना दिवस पर उन्होंने सभी को बधाई दी। साथ ही कहा कि नैतिक मूल्यों से कभी समझौत न करें।

गृहमंत्री अमित शाह भी दौरा कर गये

केन्दीय गृह मंत्री अमित शाह भी इस बीच उत्तराखण्ड का दौरा कर गये। देहरादून एयरपोर्ट पर श्री शाह का मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने स्वागत किया। आईटीबीपी के रेजिंग परेड में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे केन्द्रीय गृह मंत्री ने साथ-साथ प्रदेश की टोह भी ली। शाह के स्वागत के लिये भापा प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र भट्ट, पूर्व मुख्यमंत्री व सांसद रमेश पोखरियाल सहित तमाम नेता मंत्री उपस्थित थे।

प्रदर्शनकारी किसानों की दिवाली

बाजपुर। स्थानीय बीस गाँवों की 5838 एकड़ भूमि के भूमिधरी अधिकारों को लेकर तराई में जारी जबर्दस्त आन्दोलन के तहत किसानों ने धरना स्थल पर ही दिवाली मनाई और एलान किया कि जब तक उनकी मांग नहीं मानी जायेगी वह नहीं हटेंगे।

भूमि बचाओ आन्दोलन को तीन माह से अधिक समय हो चुका है। इनके समर्थन में स्थानीय नेता और सभी किसान संगठन समर्थन दे चुके हैं। किसानों ने ऐलान कर दिया है कि अब दीपावली के बाद जनसम्पर्क अभियान भी चलाया जायेगा। सरकार की ओर से लगातार हो रही उपेक्षा को अब बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है।

अनश्शन स्थल पर भाकियू नेता करन सिंह पड्डा, जगतार सिंह बाजवा, रजनीस सिंह सोनु, बल्ली सिंह चीमा, हरमन्दर सिंह बरार, राजेन्द्र सिंग गिल ने कहा कि भूमिधरी अधिकारों से बंचित किया जाना महापाप है। जब तक किसानों को उनका हक नहीं मिल जाता यह आन्दोलन भड़कता रहेगा। क्रमिक अनशन पर बैठे जसवीर सिंह, कुलवन्त सिंह, शेर सिंह, बाबू सिंह चौहान ने कहा कि वह लोग आमरण अनशन को भी तैयार हैं।

विरोध के बाद शरदोत्सव टल गया

पिथौरागढ़। नगर पालिका की ओर से होने वाला शरदोत्सव इस बार विरोध के कारण टल गया। शरदोत्सव और विकास प्रदर्शनीय को लेकर पहले से ही विरोध के सुर उठने लगे थे। पालिका ने कुछ लोगों और राजनीतिक विरोध के कारण आयोजन को टाल देने में ही भलाई समझी। बैठक में शरोत्सव व विकास प्रदर्शनी का आयोजन का विरोध करने वालों के लिए निन्दा प्रस्ताव पास किया गया। पालिकाध्यक्ष राजेन्द्र सिंह बिष्ट की अध्यक्षता में हुई बोर्ड की बैठक में आयोजन को लेकर चर्चा की गई। यह प्रदर्शनी 17 से 24 नवम्बर तक होनी थी। सीएम ने भी 2021 में शरदोत्सव और विकास प्रदर्शनी को राजकीय मेला करने की घोषणा की थी लेकिन इसका राजनीतिक विरोध से इस वर्ष नहीं किया जायेगा। बोर्ड की बैठक का 20 में से 12 सभासदों ने विरोध किया।

परिक्रमा

गंगोलीहाट में गुलदारों का आतंक

गंगोलीहाट। क्षेत्र में लम्बे समय से गुलदारों का आतंक मचा हुआ है। हादसों के बाद विभाग और कोठेरा में एक गुलदार पकड़ लिया गया। लेकिन दूसरा गुलदार खौफ दिखा रहा है। कोठेरा ग्राम में दो आल के अंसू को गुलदार उठा ले गया था। इसके बाद लोग गुलदार पकड़ने के लिये मांग करते रहे तब जाकर वन विभाग ने पिंजरे में गुलदार को पकड़ लिया। साथ ही दावा किया कि बच्चे को मारने वाला गुलदार पकड़ा गया यह एक ही था परन्तु पकड़ के बाद अन्य गुलदार दिखाई देने से दहशत है। लोग सायं होते ही घरों में कैद होने को मजबूर हैं। कोठेरा से तीन किमी दूर क्वीनाड़ा, कनाना में गुलदार देखा गया है। इसके अलावा मिलन राम के आवास से मुर्गी उठा ले गया। बताया जा रहा है कि एक माह के भीतर गुलदार ने दर्जन भर मवेशियों को निवाला बना दिया है। कोठेरा सहित अन्य ग्रामवासियों ने वन विभाग से गुलदार पकड़ की मांग की है।

छात्र संघ चुनाव तो गये लेकिन व्यवस्था सुधार में निकल रहा है दम

उत्तराखण्ड में एक ही दिन में छात्र संघ चुनाव करवाने की पहल बेहतर रही और चुनाव निपट गये लेकिन उच्च शिक्षा की व्यवस्था सुधार में दम निकल रहा है। छात्र संघ चुनाव के लिये तय तिथि पर कार्यवाही करने के आदेश का असर यह हुआ कि हड़बड़ाहट में फटाफट कुछ परीक्षाफल घोषित कर दिये गये। जिन्होंने चुनाव लड़ना था उनकी सूची विश्वविद्यालय को भेज दी गई। बावजूद परीक्षाफल सहित अन्य कागजात लगाने के मामले को लेकर कई कालेजों में हंगामा मचता रहा। टनकपुर डिग्री कालेज में तो अध्यक्ष पद के दो प्रत्याशियों के नामों को रोकते हुए वैध सूची जारी कर दी गई। इस पर छात्र नेताओं ने कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और इस मामले में 29 नवम्बर को निर्णय आना है। इसी तरह के कई प्रकरण जल्दबाजी के परीक्षाफल, प्रवेश से देखने को मिल रहे हैं। इन हालातों में कालेज प्रशासन को भी खूब खरी खोटी सुनने को मिल रही है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बरपटिया(ज्येष्ठरा) संगठन का आयोजन, शिवराज को सम्मानित किया

कार्यालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी। बरपटिया (ज्येष्ठरा) संगठन द्वारा यहाँ भव्य आयोजन कर एनडीए के टॉपर शिवराज सिंह पछाई व उनके माता-पिता का सम्मान किया गया। अपनी विशिष्ट संस्कृति रखने वाले बरपटिया समाज के जो लोग सीमान्त क्षेत्र से हल्द्वानी में बस चुके हैं वह समय-समय पर अपनी सांस्कृतिक एकता के प्रदर्शन करते रहे हैं। इस बार यह अवसर युवा शिवराज की मेहनत ने बनाया।

आयोजन में वक्ताओं ने अपनी संस्कृति व विषम स्थितियों का उल्लेख करते हुए कहा कि किसी भी प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में सफलता के अवसर पर लोग जश्न मनाते हैं, बरी-बारी से पार्टी देते हैं, पर जब बात ज्येष्ठता (टॉपर) की हो तो प्रत्येक जन, समाज, संगठन उनके जश्न का हिस्सा बनना चाहता है तथा कुछ हासिल करना चाहता है। वो बुद्धिमत्ता, सिगुफा, तरतीब, काबिलियत.....इस बात को स्वीकार करें या न करें, यह सत्य है चमत्कार को नमस्कार हर कोई करना चाहता है। आज संगठन गर्व महसूस कर रहा है। समाज के उन होनहार प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले रहे बच्चों के सन्दर्भ में कहना है कि आप लोग टॉपर्स के बारे में पढ़ते हैं। कुछ सीखते हैं। आज हमारे सामने शिवराज जी हैं, जिन्होंने एनडीए 2023 टॉप कर अपनी मेहनत व काबिलियत को पूरे देश के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

संरक्षक दुर्गा सिंह बोथियाल सहित तमाम लोगों ने समारोह में आकर युवा शिवराज का बधाई दी। परम्परागत वेशभूषा में एकत्रित हुए समाज ने नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जुड़े रहने का आह्वान किया। हल्द्वानी शाखा के अध्यक्ष देवसिंह सयाना के सन्देश में इस आयोजन के लिये कहा गया है- 'शिवराज से सीखें, जानें कि सफलता कैसे प्राप्त की जा सकती है, वे कौन से रास्ते हैं जो हमें मुकाम पर ले जाते हैं। हमें गर्व होना चाहिये उस माँ पर जिन्होंने जेष्ठ परिवेश दिया।'

इस भव्य आयोजन पर शिवराज सिंह ने अपने अनुभव सांझा करते हुए कहा- 'मैं एक सामान्य परिवार से हूँ लेकिन मैंने लक्ष्य बना लिया था कि कुछ करना है। असफलता के बाद भी मैं हारा नहीं और अपने अध्ययन व अभ्यास करता रहा।' आयोजन में उपस्थित लोगों में जिस प्रकार की आत्मीयता दिखाई दी वह समाज के लिये शुभ संकेत है।

उत्तरराखण्ड ने २३ सालों में हासिल किए कई मुकाम लेकिन सफर अब भी जारी

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

भारत में पहाड़ी राज्य उत्तराख्ड बनाने को लेकर प्रदेशवासियों को लम्बे संघर्ष का एक दौर देखना पड़ा। कई आन्दोलनों और शहादतों के बाद 9 नवम्बर 2000 को आखिरकार उत्तर प्रदेश से पृथक होकर एक अलग पहाड़ी राज्य का गठन हुआ। इस पहाड़ी राज्य को बनाने में कई बड़े नेताओं और राज्य आन्दोलनकारियों का अहम योगदान रहा है जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता है। उत्तराखण्ड को एक अलग पहाड़ी राज्य बनाने के लिए कई दशकों तक संघर्ष करना पड़ा। पहली बार पहाड़ी क्षेत्र की तरफ से ही पहाड़ी राज्य बनाने की मांग हुई थी।

1897 में सबसे पहले अलग राज्य की मांग उठी थी। उस दौरान पहाड़ी क्षेत्र के लोगों ने तत्कालीन महारानी को बधाई संदेश भेजा था। इस संदेश के साथ इस क्षेत्र के सांस्कृतिक और पर्यावरणीय आवश्यकताओं के अनुरूप एक अलग पहाड़ी राज्य बनाने की मांग भी की गई थी। जिसके बाद साल 1923 में जब उत्तर प्रदेश संयुक्त प्रान्त का हिस्सा हुआ करता था उस दौरान संयुक्त प्रान्त के राज्यपाल को भी अलग पहाड़ी प्रदेश बनाने की मांग को लेकर ज्ञापन भेजा गया। जिससे कि पहाड़ की आवाज को सबके सामने रखा जाए। इसके बाद साल 1928 में कांग्रेस के मंच पर अलग पहाड़ी राज्य बनने की मांग रखी गयी थी। यही नहीं साल 1938 में श्रीनगर गढ़वाल में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल हुए पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने भी अलग पहाड़ी राज्य बनाने का समर्थन किया था। इसके बाद भी जब पृथक राज्य नहीं बना तो साल 1946 में कुमाऊँ के बद्रीदत्त पांडेय ने एक अलग प्रशासनिक इकाई के रूप में गठन की मांग की थी। इसके साथ ही करीब साल 1950 से ही पहाड़ी क्षेत्र एक अलग पहाड़ी राज्य की मांग को लेकर हिमाचल प्रदेश के साथ मिलकर 'पर्वतीय जन विकास समिति' के माध्यम से संघर्ष शुरू हुआ। साल 1979 में अलग पहाड़ी राज्य की मांग को लेकर क्षेत्रीय पार्टी उत्तराखंड क्रान्ति दल का गठन हुआ। जिसके बाद पहाड़ी राज्य बनाने की मांग ने तूल पकड़ा और संघर्ष तेज हो गया। इसके बाद 1994 में अलग राज्य बनाने की मांग को और गति मिली। तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने 'कौशिक समिति' का गठन किया। इसके बाद 9 नवम्बर 2000 में एक अलग पहाड़ी राज्य बना। पहाड़ी राज्य बनाने को लेकर एक लम्बा संघर्ष चला जिसके लिए कई आन्दोलन किये गये कई मार्च निकाले गये अलग पहाड़ी प्रदेश के लिए 42 आन्दोलनकारियों को शहादत देनी पड़ी। अनगिनत आन्दोलनकारी घायल हुए। पहाड़ी राज्य की मांग को लेकर उस समय इतना जुनून था कि महिलाएं, बुजुर्ग यहाँ तक की स्कूली बच्चों तक ने आन्दोलन में भाग लिया। उत्तराखण्ड राज्य गठन में तब हमारे बड़े नेताओं और आन्दोलनकारियों के साथ ही पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं का भी अहम योगदान रहा। उत्तराखण्ड राज्य बनने से पहले गौरा देवी ने वृक्षों के कटान को रोकने के लिए चिपको आन्दोलन शुरू किया था जो लम्बे समय तक चला। इसके बाद जब अलग राज्य बनने को लेकर संघर्ष चल रहा था तो पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं ने भी इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस संघर्ष में कई महिलाओं ने अपनी शहादत दी थी जिन्हें आज भी बड़े गर्व से याद किया जाता है। उत्तराखण्ड का गठन 9 नवम्बर 2000 को उत्तर प्रदेश के उत्तर-पश्चिमी भाग के कई जिलों और हिमालय पर्वत श्रृंखला के एक हिस्से को मिलाकर किया गया था। इस साल 23वां उत्तराखंड स्थापना दिवस मनाया जा रहा है. 2007 में, राज्य का नाम औपचारिक रूप से उत्तरांचल से बदलकर उत्तराखण्ड कर दिया गया। उत्तराखण्ड 23 वर्ष बाद भी हम राज्य निर्माण की मूल अवधारणा की बुनियाद भी नहीं रख पाए। राज्य गठन के बाद से उत्तराखण्ड में सबसे ज्यादा क्या बढ़ा? उत्तर होगा- जनसंख्या, असमानता,

पलायन और आपदाएं। अनुमान है कि पिछले दो दशकों में देश में 36 प्रतिशत और उत्तराखण्ड में 50 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या बढ़ी। 2021 में जनगणना नहीं हुई, लेकिन अनुमान है कि पिछले दो दशक में उत्तराखण्ड में औसत हर वर्ष दो लाख लोगों की बढ़ोतरी हुई। पहाड़ का पानी पहाड़ के काम आए। जल, जंगल और जमीन पर हमारा अधिकार हो, यह इन्तजार अभी खत्म नहीं हुआ है। हमारी दशा चिन्ताजनक है और दिशा स्पष्ट नहीं है। निसन्देह हमें इस बात पर गुमान है कि हम दुनिया के अपनी तरह के अहिंसक और स्कल जनान्दोलन के साक्षी रहे। पहाड़ की पहाड़ जैसी समस्याओं के समाधान, रोजगार, बेहतर शासन-प्रशासन और अपनी अलग पहचान के लिए ही हमारे लोगों ने शहादतें दीं, मगर अभी तक इस यात्र में पहाड़ का जनमानस खुद को ठगा सा महसूस कर रहा है। हमारा हेप्पीनेस इंडेक्स नीचे जा रहा है। अविभाजित उत्तर प्रदेश में लखनऊ से लिए गए फैसले सुदूर पहाड़ में धरातल पर उतर जाते थे लेकिन अपना राज्य बनने के बाद ऐसे ही फैसले देहरादून से लागू नहीं हो पा रहे हैं। गढ़वाल और कुमाऊँ मण्डलों में रौनक रहती थी। काम होते थे। प्रशासनिक मशीनरी वहीं से चलती थी। आज दोनों कमीशनरी सफेद हाथी बनकर रह गई हैं। पूर्ववर्ती उत्तर प्रदेश की तुलना में उत्तराखण्ड में भ्रष्टाचार भी कई गुना बढ़ा है। राज्य का युवा रोजगार के लिए केवल सरकारी नौकरियों पर निर्भर है। हमने परम्परागत कुटीर उद्योग, बागवानी, पशुपालन आदि की घोर उपेक्षा की है, जबकि हम पर्यावरण मित्र उद्योग लगाकर रोजगार भी दे सकते थे। हम नीति-नियोजन बनाने में नाकाम हो गए। सीमान्त क्षेत्रों में नागरिक ही पहली पंक्ति के सैनिक होते हैं, जो सेना को सूचना देने, रास्ता बताने और अन्य महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग देते हैं। इन गाँवों से लोग पलायन को मजबूर हों तो यह राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से चिन्ता का विषय भी है। पलायन हमारी सबसे बड़ी चिन्ता है। हमें लोगों को गाँवों में बनाए रखने की योजना पर गम्भीरता से काम करना होगा। हिमालयी राज्य के सामने विकास के साथ पर्यावरण सन्तुलन भी एक बड़ी चुनौती है। हमें बड़ी परियोजनाओं और निर्माण में पर्यावरणीय मानकों की चिन्ता करनी होगी। प्रकृति ने उत्तराखण्ड को भरपूर दिया है, पर हमने उन क्षेत्रों की उपेक्षा की जो हमारी आर्थिकी को सुदृढ़ कर सकते थे। पर्यटन, ऊर्जा, पशुपालन, बागवानी, जड़ी बूटी, उद्यानिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रानिक उद्योग की सम्भावनाओं का हम दोहन नहीं कर सके, जबकि ये सारे क्षेत्र राज्य के विकास की काया पलट सकते हैं। हम दुनिया में बढ़ रही जैविक उत्पादों की मांग की पूर्ति करने में सक्षम थे, लेकिन खास नहीं हो पाया। आमदनी के लिए हमारी सरकारों की निर्भरता आबकारी और खनन पर केन्द्रित हो गई। इसमें भी भ्रष्टाचार और अनियमितता का बोलबाला व पारदर्शिता का अभाव दिखाई दिया। हमें सोचना होगा कि सेवानिवृत्त हो चुके पूर्व सैनिकों के पास अनुभव और प्रशिक्षण का भण्डार है। उनके सहयोग से हम तेजी से विकास पथ पर बढ़ सकते हैं चुनाव आयोग के अनुसार वर्ष 2002 से 2012 के बीच उत्तराखण्ड में मतदाताओं की संख्या 21 प्रतिशत और 2012 से 2022 के बीच 30 प्रतिशत बढ़ी। एमडीडीए के मास्टर प्लान 2041 प्रारूप में 2041 तक देहरादून की जनसंख्या दोगुनी होकर 24 लाख तक पहुँचने का अनुमान है।बढ़ती जनसंख्या के बीच राज्य की कैरिंग कैपेसिटी (धारण क्षमता) एक बड़ी चिन्ता है। राज्य में संसाधन सीमित हैं। इस तरह जनसंख्या और दबाव बढ़ते रहे तो साधन सम्पन्न लोग संसाधनों पर और कब्जा करेंगे और बेरोजगार, गरीब -गुरबे पीछे रह जाएंगे। इसके आने वाले समय में विस्फोटक परिणाम होंगे। इस समस्या पर गम्भीरता नहीं दिखी, जबकि यह सरकार की शीर्ष प्राथमिकता होनी चाहिए। पलायन आयोग के अनुसार 2008 से 2018 तक राज्य में प्रतिवर्ष 50,272 लोगों ने और 2018 से 2022 के बीच प्रतिवर्ष 83,960 लोगों ने पलायन किया। यानी हर वर्ष पहले से 33 हजार ज्यादा लोग पलायन करने लगे। ये सिर्फ आंकड़े नहीं, पर्वतीय राज्य की उस मूल अवधारणा पर ही प्रहार है, जिस कारण राज्य गठन हुआ। इस वर्ष आपदाओं से हिमाचल प्रदेश को 12 हजार करोड़ का नुकसान हुआ। जो चारधाम सड़क परियोजना की लागत के बराबर है। सुरक्षित हम फिर भी नहीं हैं, लेकिन क्या हम ईमानदारी से क्लाइमेट फ्रेंडली योजनाएं बनाने का काम कर रहे हैं। हमारी सरकार और समाज क्या इन परिस्थितियों को आत्मसात करके योजनाओं के खतरों को लेकर पर्याप्त तौर से सतर्क है? इसमें कहीं सन्देह नहीं कि कई लोगों की जिन्दगी बेहतर हुई है। लेकिन बड़ी चुनौतियां मुंह बाएं खड़ी हैं। पर्वतीय क्षेत्र के खेत जहाँ बंजर हो गए हैं और उनमें घास और झाड़ियां उग आईं हैं, वहीं शहर के खेतों में कंक्रीट के जंगल उग गए हैं। साल दर साल खेती की जमीन भी दैवीय आपदा की भेंट चढ़ती रही है और मानसून में नदियों के किनारे की जमीन बाढ़ के पानी से तबाह हो जाती है। पिछले 23 सालों में खेती का रकबा काफी घट गया है। जनसंख्या, असमानता, पलायन और आपदाओं के मध्य उत्तराखण्ड को पीछे छूट चुके लाखों लोगों को साथ लेकर चलने की जरूरत है। यही शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

दीपक बल्युटिया

प्रवक्ता

उत्तराखण्ड कांग्रेस पार्टी

Hotel

Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise

Bus Station

Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)

गोदाम- जोहार एसोसिएट्स

बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी

मो.- 7409440813, 7500619761

MARTOLIA FURNITURE

A unit of Martolia Enterprises

Pilikothi, Haldwani

Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

मो. 9760007148

www.mountainheights.in

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236

8958525979, 9411134775

Enjoy Beauty of Himalaya at

MARTOLIA LODGE

Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari

A Home Away From Home & Home Stay

Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

पत्र व्यवहार के लिये पते- जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)